इकाई - III Date - 03.06.2020

Topic - भाषा सीखने सिखाने में सृजनात्मकता का महत्व :-

Ans → सृजनात्मकता व्यक्ति की उस क्षमता को कहा जाता है जिससे वह कुछ नई चीजों, रचनाओं या विचारों को पैदा करता है जो नया होता है। भाषा बच्चों की रचनाशीलता को बढ़ाती है। कोई कहानी, कविता या गीत सुनकर बच्चे स्वयं कुछ करने की दिशा में प्रवृत्त हो सकते हैं। भाषा की पुस्तकों की कहानियों, समस्याओं को सभी बच्चे अपने-अपने तरीके से समस्या का समाधान देने की कोशिश करते हैं और कहानी को अपने तरीके से आगे भी बढ़ा सकते हैं। इससे उनमें सोचने, समझने की तर्क करने की क्षमता तथा उनकी रचनात्मक क्षमता का विकास होगा। अतः भाषा की कक्षा में और अन्य गतिविधियों के द्वारा बच्चों को पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जाएँ कि वे भाषा का सार्थक प्रयोग कर सकें। अपनी शैली में या अपने तरीके से किसी बात को कहना, लिखना भी भाषा शिक्षण का उद्देश्य है। यह भाषा की सृजनशीलता है और बच्चे तो प्रारंभ से ही भाषा का सृजनशील प्रयोग करते ही हैं, चाहे वह कोई कहानी गढ़ना हो या बहाना बनाना हो।

उदाहरण के लिए यदि बच्चों को किसी चित्र को पहचानते हुए वाक्य बनाने हैं तो उसे अपनी सृजनात्मक शक्ति का इस्तेमाल करना होगा। जैसे - यदि हम उन्हें चिड़िया गाय, पतंग, टेलीफोन आदि के चित्र दिखाए तो वह अलग-अलग अर्थ रखते हैं और यह भी कि बच्चों ने अलग-अलग संदर्भ में देखा होगा। इसके आधार पर बच्चा अपनी कल्पना को लिखेगा तो उसके लेखन कौशल का विकास होगा और अपनी कल्पना को भाषण के सृजन के माध्यम से कागज पर उकेरेगा। बच्चे को किसी चिड़िया का दाना चुगना पसंद होगा या उसने गौर किया होगा कि किसी चिड़िया का पानी में सर डुबोकर झटकना या किसी चिड़िया को पंख पसार कर उड़ना पसंद है। इस प्रकार गाय का दूध दुहना गायों का सिंग मारना या गायों का पूछ उठाकर दौड़ना आदि बच्चों के आकर्षण के विषय हो सकते हैं। वाक्य बनाने में भाषा की सृजनात्मकता शामिल है।

END

Scanned with CamScanner